IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंजाब राज्य का लोकसंगीत

1.हीरू शर्मा , शोध छात्रा, श्री जेजेटी विश्वविद्यालय रजि.

2. डॉ. रंजना सक्सेना, शोध निर्देशिका, श्री जेजेटी विश्वविद्यालय,

सारांश - पंजाब में गाए जाने वाले प्रमुख लोकगीत जुगनी, सम्मी, माहिया, टप्पे, काफियां, सिठनी, बोलियां, झोकन, हीर-रांझा मिर्जा-साहिबान, सोनी-महिवाल, सस्सी-पन्नू आदि हैं। इन लोकगीतों में बलिदान, देश भक्ति, जोश, उत्साह, उमंग, आपसी तालमेल देखने को मिलता है। फसल (बैसाखी), संस्कार गीत, त्योहार गीत (होली, दीवाली, कृष्ण जन्म, राखी, लोहड़ी) ऋतु गीत कजरी, चैती, झूला हैं। लोकगीतों में खाने की वस्तुएं, पहनावा, श्रृंगार, घर में उपयोग में लाने वाली वस्तुओं का भी वर्णन होता है, जिससे पता चलता है कि ग्रामीण परिवेश में और शहरी परिवेश में इन चीजों के प्रयोग में क्या अंतर है। दिन-प्रतिदिन के सामाजिक जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जब गीतों के द्वारा उन शुभ अवसरों को और अधिक महत्व पूर्ण बनाया जाता है। स्त्रियां और पुरुष, बालक और बालिकाएं यहां तक कि घर के बुजुर्ग भी इस गीत-संगीत का हिस्सा बनते हैं। नृत्य करने वाले लोगों के ऊपर न्योछावर की जाती है जो कि घर की किसी मालिन या धोबिन को दे दी जाती है।

संकेताक्षर- पंजाब, लोकगीत, पंजाबी भाषा के शब्द, सम्मी, माहिया, टप्पे, काफियां

शोध विधि - प्रस्तुत शोध-पत्र कार्य को पूरा करने के लिए उपलब्ध एवं प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। इस विधा से जुड़े विद्वान संगीतज्ञों से संपर्क स्थापित कर शोध की सामग्री एकत्रित की गई है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, इंटरनेट एवं निम्नलिखित स्रोतों से भी शोध विषयक सामग्री प्राप्त कर शोध-पत्र को प्रमाणिक बनाने का प्रयास किया गया है।

1. पुस्तक एवं पत्रिकाएं 2.डिजिटल मीडिया 3.निरीक्षण तकनीक 4.शोध-पत्र

उद्देश्य-

पंजाब राज्य के लोकगीतों का अध्ययन करना।

पंजाब राज्य के लोकगीतों के वर्ण्य विषय का अध्ययन करना।

पंजाबी लोकगीतों में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख पंजाबी भाषा के शब्दों की जानकारी प्राप्त करना

प्रस्तावना -

पंजाब का मतलब है पांच नदियों का समूह। ऋग्वेद में इस स्थान को सप्त सिंधु के नाम से जाना गया है। ब्यास और सतलुज नदी इस समय पंजाब राज्य में बहती हैं। भारत के विभाजन के पश्चात झेलम, चेनाब और रावी तीनों नदियां पाकिस्तान के क्षेत्र में है। वर्तमान में पंजाब राज्य की जनसंख्या दो करोड़ सतहत्तर लाख है। पंजाब राज्य का क्षेत्रफल पचास हजार तीन सौ बांसठ (50, 362) वर्ग किलोमीटर है। 14 मई 2021 को मलेरकोटला को भी एक जिले के रूप में अनुमति प्रदान की गई है जिसे मिलाकर अब पंजाब राज्य में कुल तेईस जिले हैं। अमृतसर, लुधियाना, जालंधर, पठानकोट, पटियाला, बठिंडा प्रमुख जिले हैं। पंजाब में जट सिख, हिंदू तथा दलित समुदाय के लोग रहते हैं।

पंजाब राज्य का परिचय- पंजाब राज्य को मुख्यतः तीन भागों में बांटा गया है मालवा, माझा और दोआब। सबसे छोटा क्षेत्र दोआब का है। राज्य को दो भागों में बांटती हैं ब्यास और सतलुज नदी। दो नदियों के बीच का स्थान दोआब नाम से जाना जाता है तथा यह क्षेत्र अपनी समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है। दोआब क्षेत्र से विदेश में जाकर बसने वाले पंजाबी बहुत हैं। जालंधर, कपूरथला, होशियारपुर, नवांशहर आदि जिले दोआब के क्षेत्र में आते हैं। यहां अनुसूचित जाति के लोग बहुतायत में रहते हैं। सतलुज नदी से लेकर राजस्थान के बॉर्डर तक मालवा का क्षेत्र माना जाता है। बड़ा भाग होने के कारण यहां पानी की समस्या बनी रहती है। यहां के पानी में कुछ रासायनिक तत्वों की अधिकता के कारण कैंसर जैसी बीमारी की अधिकता देखी जाती है यहां मलवई बोली का प्रचार है। बरनाला, बठिंडा, फरीदकोट, लुधियाना, मोगा, मुक्तसर, संगरूर, फाजिल्का आदि क्षेत्र मालवा के अंतर्गत आते हैं। अंतरराष्ट्रीय सीमा अटारी बॉर्डर से लेकर ब्यास नदी तक के स्थान को माझा कहते हैं। इस इलाके में पठानकोट, गुरदासपुर, अमृतसर तथा तरनतारन जिले आते हैं। माझा का इलाका अति संवेदनशील है क्योंकि इसकी सीमाएं पड़ोसी देश पाकिस्तान से लगती हैं।

पंजाब ने स्वतंत्रता के पश्चात अपना एक बहुत बड़ा भूभाग को दिया खो दिया। 1947 के पहले पंजाब का जो क्षेत्रफल था वह चार भागों में बट गया। एक हिस्सा पाकिस्तान में चला गया तथा तीन हिस्सों में पंजाब, हिमाचल प्रदेश और हरियाणा राज्यों का निर्माण किया गया है। लोकगीत क्योंकि काफी पुराने होते हैं इसलिए आज भी हिमाचल प्रदेश, हरियाणा एवं पंजाब में गाए जाने वाले मुख्य लोकगीत लगभग एक से ही है। नए नवनिर्मित कुछ लोकगीतों में कवियों ने भिन्नता दिखाने के लिए हरियाणवी अथवा हिमाचली भाषा का प्रयोग किया है।

शास्त्रीय संगीत का पटियाला घराना- शास्त्रीय संगीत का पटियाला घराना अत्यंत प्रसिद्ध है, जिसमें अनेक प्रसिद्ध गायक हुए हैं, जिन्होंने अपनी आकर्षक गायन शैली के द्वारा पूरे भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विश्व में भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। पटियाला घराना के तबला वादकों में उस्ताद अल्लारखा खां और उनके पुत्र उस्ताद जाकिर हुसैन विश्व प्रसिद्ध है। बड़े गुलाम अली खान की आवाज का जादू हर एक संगीत प्रेमी के मन मस्तिष्क पर छाया रहता है। आज गायिकाओं में कौशिकी चक्रवर्ती एवं उनके पिता पंडित अजय चक्रवर्ती ने पटियाला घराने की गायकी को अपनाकर प्रसिद्धि प्राप्त की है। पटियाला घराने की गायकी पर टप्पा अंग की छोटी-छोटी जमजमा तानों का प्रभाव देखने को मिलता है।

धार्मिक गीत- शबद-कीर्तन आदि धार्मिक गीतों का वर्णन गुरु ग्रंथ साहिब में मिलता है। शास्त्रीय संगीत में वर्णित रागों और तालों निबध्द धार्मिक पदों का प्रतिदिन सुबह और संध्या के समय प्रत्येक गुरुद्वारे में गायन होता है जिसमें हारमोनियम और तबले के साथ गुरुद्वारे के रागी इन पदों का गायन करते हैं।

भाषा- पंजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी है। पंजाब राज्य का इतिहास और उसकी संस्कृति की विशेषताएं अधिकांशत: पंजाबी भाषा (गुरुमुखी लिपि) में ही लिखी हुई है किंतु आजकल पूरे भारतवर्ष में

पंजाबी लोक संगीत का इतना अधिक प्रचार हो गया है कि हिंदी और रोमन अंग्रेजी में भी पंजाबी गीत संगीत प्रकाशित हो रहा है। पंजाबी लोक संगीत के ऊपर अनेक पुस्तकें भी लिखी गई हैं तथा शोध पत्र भी लिखे गए हैं।

पंजाब में गाए जाने वाले प्रमुख लोकगीत- जुगनी, सम्मी, माहिया, टप्पे, काफियां, सिठनी, बोलियां, झोकन, हीर-रांझा मिर्जा-साहिबान, सोनी-महिवाल, सस्सी-पन्नू आदि हैं। इन लोकगीतों में बलिदान, देश भक्ति, जोश, उत्साह, उमंग, आपसी तालमेल देखने को मिलता है।

लोकगीतों के वर्ण्य विषय- फसल (बैसाखी), संस्कार गीत, त्योहार गीत (होली, दीवाली, कृष्ण जन्म, राखी, लोहड़ी) ऋतु गीत कजरी, चैती, झूला हैं। लोकगीतों में खाने की वस्तुएं, पहनावा, श्रृंगार, घर में उपयोग में लाने वाली वस्तुओं का भी वर्णन होता है, जिससे पता चलता है कि ग्रामीण परिवेश में और शहरी परिवेश में इन चीजों के प्रयोग में क्या अंतर है।

पंजाबी लोकगीतों का आधार विभिन्न प्रणय कथाएं- पंजाब प्रांत के लोकगीतों में अनेक प्रणय कथाएं प्रचलित हैं। इन प्रेम कथाओं में पंजाबी लड़कियों की व्यथा कथा व्यक्त की गई है। अफगानिस्तान की ओर से भारत में आने वाले व्यापारियों से संबंधित ये कहानियां उस प्रेम पर आधारित है जो मुख्यतः शारीरिक आकर्षण से प्रारंभ होकर आत्मिक प्रेम तक बढ़ जाती हैं किंतु प्रेमी और प्रेमिका का प्यार अपनी अंतिम अवस्था मिलन तक नहीं पहुंच पाता है। इन कथाओं पर आधारित अनेक चित्रकारों ने पेंटिंग्स बनाई हैं तथा फिल्मकारों ने इन कथाओं को आधार बनाकर अनेक फिल्मों का निर्माण किया है जो कि बहुत प्रचलित भी हुई हैं।

सिठनी - लोक काव्य की एक प्रमुख धारा है जो शब्द सिठ से निकली है। सिठ का अर्थ है ऐसे शब्द जो गाली या व्यंग्य के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। पहले के समय में जब जमीदार काम करने वाले लोगों को उनकी मज़दूरी का यथोचित दाम या अनाज नहीं देते थे तब क्रोधित होकर काम करने वाले मजदूर उन्हें गाली देते हुए, अनादर या गलत शब्द कहते हुए जो बातें कहते थे वे सिठ के अंतर्गत आती थी। पंजाबी लोक काव्य में विवाह के समय कन्या पक्ष की महिलाएं वर पक्ष के पुरुषों को बुरा भला कहते हुए उनका नैतिक रूप से अनादर करती हैं तथा यह बताने का प्रयत्न करती हैं कि उनके पास वह सब कुछ नहीं है जो कन्या पक्ष के पास है। इस तरह से कन्या पक्ष और वर पक्ष के बीच एक तरह से खुला हंसी-मजाक होता है। इस लोक काव्य में जाट जाति को अधिक महत्व दिया गया है, उसे अधिक शक्तिशाली, अधिक धनवान तथा अधिक बुद्धिमान बताया जाता है। समाज में इसकी उच्च स्थिति के कारण प्रत्येक कन्या यह चाहती है कि उसका वर जाट हो।

घोड़ी गीत- पंजाब में विवाह के अवसर पर वर पक्ष में घोड़ी गीतों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, जब वर विवाह के लिए कन्या के घर जाता है तब घोड़ी पर चढ़कर जाता है। इस समय घर के सभी पुरुष, स्त्रियां व घर के अन्य सदस्य प्रसन्नता पूर्वक नृत्य करते हैं। घोड़ी पर सवार होने से पहले वह अपने घर के बड़े बुजुर्गों से आशीर्वाद लेता है तथा सभी मिलकर इस शुभ अवसर पर अपने पूज्य देवता के दर्शन करने के लिए मंदिर या गुरुद्वारा भी जाते हैं। इस अवसर पर सभी सुहागन स्त्रियां ईश्वर से यह प्रार्थना करती हैं कि घर में सभी बड़े बुजुर्गों का स्वास्थ्य अच्छा रहे, उनका आशीर्वाद सभी बच्चों पर बना रहे, वर और कन्या विवाह उपरांत सुख पूर्वक रहें तथा उनका पारिवारिक जीवन मंगलमय हो। एक उदाहरण -

विदाई गीत- विवाह संस्कार संपन्न होने के पश्चात जब कन्या अपने ससुराल के लिए विदा होती है तब ये गीत मुख्यत: कन्या पक्ष की महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं। कन्या के अपने पिता के घर से पति के घर जाने के वियोग में सभी पारिवारिक सदस्य, बहन, भाई, सखियां-सहेलियां दुखी हो जाते हैं। इन गीतों में कन्या अपने बचपन से लेकर युवावस्था तक के अविस्मरणीय पलों को याद करते हुए भावुक हो जाती

है। विदा के समय वह सबसे गले मिलती है और सब उसके लिए ये शुभ कामनाएं करते हैं कि वह अपने ससुराल में सदा सुखी रहे। कुछ विदाई गीत कन्या की मनोदशा व्यक्त करने वाले होते हैं तो कुछ माता- पिता, भाई- बहन की एवं सहेलियों की मनोदशा व्यक्त करने वाले होते हैं। ये गीत इतने मार्मिक होते हैं कि जब ये गीत गाए जा रहे होते हैं तो सुनने वाले लोगों की आंखों से भी आंसुओं की धारा बहने लगती है। इन गीतों को सुनकर उन्हें भी अपनी कन्या की विदाई याद आ जाती है। वर्षों से चले आ रहे ये विदाई गीत आज भी जब विवाह के अवसर पर गाए जाते हैं तो उतने ही मार्मिक एवं हृदय स्पर्शी होते हैं। इन भावों को व्यक्त करने वाले गीत विदाई गीत के अंतर्गत ही आते हैं।

वारें- ये गीत युद्ध में घटी हुई घटनाओं को व्यक्त करने वाले होते हैं। साहसी योद्धाओं के द्वारा युद्ध में किस प्रकार वीरता पूर्वक युद्ध किया गया, उसकी गाथा को अत्यंत सुंदर ढंग से व्यक्त करते हैं। पंजाब में खालसा की वार, चंडी दी वार, बंदा वीर बैरागी की वार और गुरु गोविंद सिंह की वार नाम से ये गीत प्रसिद्ध हैं। कुछ अन्य लोकप्रिय वार इस प्रकार हैं।

हीर- पंजाब की लोकप्रिय गाथाओं में हीर-रांझा के गीत सबसे अधिक प्रचलित हैं। वारिस शाह के द्वारा लिखे गए हीर पंजाब में बहुत गाए जाते हैं। ये हीर मुख्यतः राग मिश्र भैरवी में गाए जाते हैं। वारिस शाह के ये हीर सूफी गीतों की तरह हैं जिनमें ईश्वर और आत्मा को पति और पत्नी या प्रेमी और प्रेमिका की तरह व्यक्त किया जाता है। पंजाबी लोकगीतों की श्रृंखला में हीर और रांझा के गीत भी बहुतायत से पाए जाते हैं। सियाल गांव की कन्या हीर अत्यंत सुंदर थी तथा वह रांझे की अप्रतिम बांसुरी की धुन पर मोहित हो गई थी। धीरे-धीरे हीर और रांझे की प्रेम कहानी आगे बढ़ती है। रांझे का असली नाम धीदो था। वह तख्त हज़ारे गांव का निवासी था। वह मौजू चौधरी के सात बेटों में सबसे छोटा था। जब जमीन का बंटवारा हुआ तो बड़े भाइयों ने जमीन का अच्छा हिस्सा अपने पास रख लिया किंतु जो बंजर हिस्सा था वह धीदो के नाम कर दिया। धीदो वहां पर कोई खेती या व्यापार न कर पाया इसलिए वह अपनी प्रिय बांसुरी लेकर उस गांव से बाहर चला गया। हीर के चाचा कैदों को उन दोनों की प्रेम कहानी के विषय में पता चल गया था। हीर के घर वाले रांझे के साथ उसका विवाह करने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने रंगपुर के एक निवासी के साथ हीर का विवाह करने का निश्चय कर लिया। हीर इस विवाह के लिए तैयार नहीं थी अतः चाचा और भाइयों ने मिलकर उसे आबे हयात के बहाने जहर पिला दिया और इस प्रकार हीर ने जीवन त्याग दिया। रांझा बाद में जोगी बन गया। आज भी हीर और रांझे के प्रेम के गीत प्रणय लोकगीतों की आत्मा के रूप में गाए जाते हैं।

माहिया - पंजाब प्रांत में माहिया और बालो की जोड़ी लोक साहित्य में अत्यंत प्रसिद्ध है। लोकगीत में टप्पा गायन शैली के छोटे-छोटे टप्पे माहिया और बालो की प्रेम कथा व्यक्त करते हैं। बालो गुजरात के एक धनी परिवार की पुत्री थी जहां पर स्त्रियों को बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी। माहिया का असली नाम मोहम्मद अली था जिसे बालो माहिया कहकर पुकारती थी। वह एक अच्छा गायक था और अपनी मधुर आवाज में टप्पे गाता था। बालो जब मोहम्मद अली के तांगे पर बैठकर कहीं जाती थी तो वह उन टप्पों को सुनती थी और उनके प्रति उत्तर में वह अपने प्रेमी के लिए जो गीत गाती थी उन्हें माहिया नाम से पुकारा जाता है। माहिया के द्वारा गाए हुए कुछ टप्पे इस प्रकार भी हैं।

ढोला- पटियाला घराने के प्रसिद्ध उस्ताद बरकत अली खान साहब और आशिक अली खान लोकगीत ढोला गाने में बहुत रुचि दिखाते थे। ये गीत मुख्यतः तिलंग और भैरवी रागों में गाए जाते हैं। पंजाबी भाषा में अपने प्रिय या प्रियतम के लिए ढोला शब्द का प्रयोग किया जाता है। इन लोकगीतों में ढोला शब्द अवश्य आता है।

प्रमुख लोकगीत गायक- प्रमुख लोकगीत गायकों के नाम इस प्रकार हैं- अमर सिंह चमकीला, लालचंद यमला जट्ट, नरेंद्र बीवा, हंसराज हंस, मनमोहन वारिस, वडाली बंधु, सुरेंद्र कौर-प्रकाश कौर, कुलदीप मानक अर्श मोहम्मद, आलम लोहार, बब्बू मान आदि।

लालचंद यमला जट्ट- लोकगीत गायन में अपना विशेष स्थान बनाने वाले लाल चंद्र जी का जन्म 28 मार्च 1910 को लायलपुर फैसलाबाद में हुआ था। बचपन से ही आप में गायन की प्रतिभा थी। आपकी स्कूली शिक्षा तो बहुत अधिक नहीं हुई थी किंतु स्वर और ताल की सूझबूझ बहुत अच्छी थी।आप भारत विभाजन के पश्चात लुधियाना शहर के जवाहर नगर क्षेत्र में रहने लगे थे। आपका संबंध बटवाल परिवार से था। आपने संगीत की शिक्षा पंडित दयाल और चौधरी मजीद से प्राप्त की थी आपने उस्ताद साहब दयाल सुदका से संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। आपने शास्त्रीय संगीत की भी शिक्षा प्राप्त की थी इसलिए आपका स्वर बहुत सधा हुआ था। आपके छोटे भाई जस बल्लगन भी बहुत अच्छा गाते थे और दोनों की जोड़ी तोता भाई के नाम से प्रसिद्ध थी। आपका निधन 20 दिसंबर 1991 को हो गया था। आप एक तुर्ला पगड़ी बांधते थे जिसके कारण आपकी पहचान थी, यह आपके ऊपर बहुत सजती थी। 1930 ईस्वी में राम राखी जी के साथ आपका विवाह हुआ था। आपके दो पुत्रियाँ तथा पांच पुत्र थे।

आपने मोहिंदर सिंह कौर सेखों के साथ अनेक युगल गीत भी रिकॉर्ड किए थे। 1952 ईस्वी में एच. एम. वी. की पहली रिकॉर्डिंग की और उसके पश्चात अनेक रिकॉर्डिंग्स के द्वारा आपने संगीत जगत में अपना नाम बनाया। आपने अनेक युवाओं को पंजाबी पारंपरिक लोकगीत शैली की शिक्षा प्रदान की। आपके शिष्यों में वेद प्रकाश, नरेंद्र बीबा आदि प्रमुख हैं। लोकगीत गायक के रूप में आपके कार्यों के लिए1956 ईस्वी में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आपको स्वर्ण पदक से सम्मानित किया था। 1989 ईस्वी में केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी ने आपको आजीवन योगदान के लिए पुरस्कृत किया था। आपके द्वारा गाए हुए गीत 'तारा पावे बोलियां' 'जवानी मेरी रंगीली' ' सैंया द कोठा' 'चरखी रंगीली तेरी' 'सतगुरु नानक तेरी लीला न्यारी' आदि प्रमुख प्रसिद्ध गीत हैं।

आप एक तारा, चिकारा, सारंगी आदि सभी वाद्य बहुत अच्छी तरह से बजाते थे इसके अतिरिक्त घड़ा और ढोलकी भी बड़े सुंदर ढंग से बजाते थे। आप गुरु श्री भाई वीर सिंह और सुंदर सिंह आसी के लिखे हुए गीतों को बहुत अच्छी तरह से गाते थे। आपको सादगी भरा जीवन पसंद था तथा स्त्रियों के युवा शरीर, श्रृंगार और आभूषण से संबंधित गीत उन्हें बहुत पसंद नहीं थे।

नरेंद्र बीवा- आपका जन्म बैसाखी के दिन 13 अप्रैल 1941 को जिला सरगोधा में हुआ था। आपके पिता का नाम फतेह सिंह राणा तथा माता का नाम महेंद्र कौर था। आपकी बी. ए. तक की सामान्य शिक्षा लुधियाना में हुई और फिर आपने संगीत विषय में बी. ए. 1974 ईस्वी में किया। आपने लोक संगीत की शिक्षा लालचंद जमला जट से प्राप्त की थी। आपको बीबा जी के नाम से भी जाना जाता है। आपका विवाह जसपाल सिंह सोढ़ी से हुआ था। आपने 1960 से 1990 के 3 दशकों में अपने गायन से एक सम्मानित लोक संगीत गायिका के रूप में पहचान बनाई। भारत के साथ-साथ आपने जर्मनी, कनाडा, इंग्लैंड आदि देशों में भी अपने लोकगीतों से लोगों के बीच प्रसिद्ध प्राप्त की। अभी तक बाजार में आपके हजारों की संख्या में रिकॉर्डस की बिक्री हो चुकी है। आपने अनेक पंजाबी फिल्मों में गीतों का गायन किया। आपके तीनों भाई अमीर सिंह राणा, सरदार फकीर सिंह फकीर और रणवीर सिंह राणा भी आपके साथ गाते थे। पंजाबियों में आपके गानों के प्रति बहुत दीवानगी है। 56 वर्ष की आयु में 27 जून 1997 को आपका निधन हो गया। आपकी याद में प्रतिवर्ष सितंबर के महीने में सादिकपुर गांव में दोआबा सभाचारक क्लब एक मेले का आयोजन करता है। आपने मिर्जा-साहिबा, सस्सी-पुन्नू जैसे प्रेमी युगल के गीत तथा अनेक देशप्रेम के गीत भी गाए। आपके एकल और युगल दोनों प्रकार के गीतों के अनेक रिकॉर्ड्स बाजार में उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष- पंजाब के लोकगीतों में व्यक्त कहानियां यह बताती हैं कि संस्कृति एक न होने के कारण ये प्रेम कथाएं परवान न चढ़ सकीं और इनका अंत अच्छा नहीं हुआ किंतु आज भी सच्चे प्रेम को पाने के लिए लड़कियां स्वयं की तुलना हीर, सम्मी व साहिबा से ही करती हैं। सस्सी-पुन्नू, सोहिनी-महिवाल, पूरन-भगत, यूसुफ-जुलैखा, हीर-सलेटी, सोहना-जैनी, मिर्ज़ा- साहिबा, कैस की लैली आदि प्रेम गाथाएं पंजाब में प्रचलित हैं। इन जोड़ियों का एक दूसरे के प्रति शारीरिक आकर्षण की सीमा से परे अद्वितीय प्रेम, अलौकिक था। आज भी प्रेमी इन्हें अपना आदर्श मानते हैं।

आज पंजाब राज्य में ईसाई धर्म प्रचारक, सिख धर्म के मानने वाले नौजवानों को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर रहे हैं। धन के लोभ में ये सिख अपनी संस्कृति और सभ्यता को छोड़कर ईसाई धर्म को अपना रहे हैं। इस पतन को रोकने के लिए शिक्षा के मंदिरों से ही पुनः कार्य प्रारंभ करना होगा। पंजाब की धार्मिक परंपराओं को आगे बढ़ाने वाले गुरुओं के रास्ते पर चलकर ही पुनः सांस्कृतिक जागरण संभव है। आज लोक संगीत को लोकप्रिय बनाने की दिशा में निर्णायक कदम उठाने की आवश्यकता है। उपभोक्तावादी संस्कृति के बहकावे में आकर युवा पीढ़ी को अपने सांस्कृतिक मूल्यों को त्यागना नहीं चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

एक्जिस्टेंस ऑफ़ कॉस्ट इन पंजाबी फोक लोर: ए क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ़ सिठनिया, गुरजीत सिंह आईएसएसएन नंबर 2349-5162, जे ई टी आई आर नवंबर- 2013 वॉल्यूम 10, इश्यू 11

कल्चरल एंड फूड सिंबॉलिज्म इन फोक सोंग्स ऑफ़ पंजाब, रूपाली सहगल, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, न्यू दिल्ली, 15 नवंबर 2020

किनशिप इन फोकलोर : ए स्टडी ऑफ सिलेक्टेड पंजाबी सॉन्ग्स, अंकिता सेठी आई एस एस एन 2456-4370 ए. डी. आर. जर्नल्स 2017, दिल्ली विश्व विद्यालय

पंजाब का लोक संगीत एक समृद्ध सामाजिक परंपरा, डॉक्टर नरेंद्र कौर, वॉल्यूम 2, इश्यू 1, जनवरी-मार्च 2014, स्वर सिंधु, आईएसएसएन नंबर 2348-9197

मेकिंग मीनिंग ऑफ़ पंजाबी फोक सोंग्स इन हिंदी सिनेमा ए जेंडर पर्सपेक्टिव, अनीता चहल, प्रमाण रिसर्च जनरल आईएसएसएन नंबर 2249-2976, वॉल्यूम 8 इ श्यू 9, 2018